हर एक जरूरी

मनोहर चमोली 'मनु'

अचानक हाथी को न जाने क्या सूझा। वह चिढ़ते हुए गिद्ध से बोला- ''वैसे अभी यहां कोई मरा नहीं है, जो तुम अपना झुण्ड लेकर आ गए। सड़ा-गला खाते हो। तुम्हारे शरीर से बदबू आ रही है।'' खरगोश भी बोल पड़ा-''उफ! अचानक चारों ओर बदबू ही बदबू फैल गई है।'' शेर दहाड़ा। गिद्धों से बोला- ''बारिश नहीं हुई है। तालाब सूख गए हैं। नदी में पानी लगातार कम होता जा रहा है। यदि बारिश नहीं हुई तो सूखा पड़ेगा। अकाल। जीव-जंतु मरेंगे। तब तुम्हारी जरूरत पड़ेगी। अभी तुम्हारा यहां कोई काम नहीं है।

जाड़ा बीत गया। बारिश नहीं हुई। पशु और पक्षी मिल-बैठ कर योजना बना रहे थे। नदी किनारे वह इकट्ठा हो चुके थे। बंदर ने कहना शुरू किया ही था कि कुछ विशालकाय गिद्धों की परछाई से छोटे जीव डर गए। गिद्ध पंखों को फड़फड़ाते हुए पेड़ों की डाल पर बैठ गए। एक बूढ़ा गिद्ध बोला- ''घबराने की जरूरत नहीं है। हम गिद्ध हैं।'' गिलहरी ने कहा- ''ओह! मैं तो डर ही गई थी।''

अचानक हाथी को न जाने क्या सूझा। वह चिढ़ते हुए गिद्ध से बोला- ''वैसे अभी यहां कोई मरा नहीं है, जो तुम अपना झुण्ड लेकर आ गए। सड़ा-गला खाते हो। तुम्हारे शरीर से बदबू आ रही है।'' खरगोश भी बोल पड़ा-''उफ! अचानक चारों ओर बदबू ही बदबू फैल गई है।'' शेर दहाड़ा। गिद्धों से बोला- ''बारिश नहीं हुई है। तालाब सूख गए हैं। नदी में पानी लगातार कम होता जा रहा है। यदि बारिश नहीं हुई तो सूखा पड़ेगा। अकाल। जीव-जंतु मरेंगे। तब तुम्हारी जरूरत पड़ेगी। अभी तुम्हारा यहां कोई काम नहीं है। जाओ यहां से।

जंगल में एक दिन अचानक दूसरे जंगल से आए जंगली कुत्तों के झुण्ड ने हमला बोल दिया। उनका झुण्ड बड़ा था। कोई तैयार न था। छोटे-बड़े जानवरों को मारते हुए वे आगे बढ़ गए। उन्होंने सैकड़ों जीवों पर हमला किया था।

पर्यावरण संतुलन में पक्षियों का एक बड़ा योगदान है।

जंगल में चारों ओर मरे हुए जानवरों को छोड़ वे आगे बढ़ चुके थे। जीवों ने एक बैठक बुलाई। सबने इस आई मुसीबत पर दुख जताया। शेर बोला- "जंगली कुत्तों का झुंड बहुत बड़ा था। वह किसी नियम-कानून को नहीं मानते। हम कुछ समझ पाते। कुछ सोच पाते उससे पहले उन्होंने हमारे जंगल के सैकड़ों जानवरों को मार गिराया। वे बेवजह हमला करते हैं। चाहे उन्हें भूख न भी हो तब भी।" हाथी ने कहा- "एक तरफ जल का संकट है, वहीं दूसरी ओर यह हमला हो गया है। सब सावधान रहें और सतर्क रहें।"

जंगल में कुछ भी ठीक नहीं चल रहा था। अब जंगल में अकारण जीव मरने लगे कीट-पतंगों की आबादी बढ़ गई। मक्खी-मच्छर परेशान करने लगे। जल्दी ही बात समझ में आ गई। बिल्ली ने कहा- "कई दिनों से सोच रही थी आज समझ में आ गया है। गिद्धों के न रहने से जंगल में सब कुछ गड़बड़ हो गया है। उन्हें वापिस बुलाना होगा।"

हाथी ने लापरवाही से कहा- "गिद्धों को बुलाना होगा? मगर क्यों?

बिल्ली ने बताया- "धरती में रोजाना कई जीव मरते हैं। अनगिनत जानवरों के शवों को यही गिद्ध कुछ ही घंटों में सफाचट कर देते हैं। बचती हैं तो केवल हड्डियां। अगर गिद्ध न रहें तो सड़े शवों की बदबू से हमारा जीना मुहाल हो जाएगा। प्रकृति की भोजन श्रृंखला गड़बड़ा जाएगी। वैसे भी अब गिद्ध बहुत कम हो गए हैं।" अब चौंकने की बारी गिलहरी की थी। वह बोली- "कम हो गए हैं। कैसे?"

बिल्ली ने कहा- "आजकल कई फसलों में जहरीले कीटनाशक मिलाए जा रहे हैं। वही फसलें जीव-जन्तु खा रहे हैं। उन्हीं जानवरों के शवों को यह गिद्ध खाकर बीमार हो जाते हैं। कीटनाशक जहर केवल गिद्धों तक ही नहीं पहुंचता। अन्य जीवों के शरीर में भी पहुंच रहा है। खेतों से पानी में बहकर जल के रूप में कई जीवों के शरीर में पहुंच रहा है। नदियों से यह कीटनाशक मछलियों के शरीर में पहुंच रहा है।

जल की कमी जंगली जानवरों के लिए मृत्यु का सबब बन रहा है।

मछलियों को खाने से अन्य जीवों के शरीर में पहुंच रहा है। मांसाहारी जीवों के अलावा भी कीटनाशक अंडा, दूध और साग-सब्जियों में भी पहुंच रहे हैं।" शेर सब सुन रहा था। वह बोला- "किन दवाओं में यह कीटनाशक ज्यादा है?" बिल्ली ने सोचते हुए बताया- "एल्ड्रिन, डी.डी.टी., डाई-एल्ड्रिन, क्लोरडेन। कई देशों ने इन जैसी कई दवाओं पर रोक लगा दी है। कई कीटनाशक दवाओं का असर तो मां के दूध में भी देखा गया है। फिर भी चोरी-छिपे यह दवाएं बेची और खरीदी जा रही हैं।

शेर ने कहा- "पक्षियों की मदद से सबसे पहले गिद्धों को ससम्मान बुलाओ। हमने बैठक में बिना सोचे-समझे उनका अनादर किया है। मुझे नहीं पता था कि प्रकृति में हर जीव की खास भूमिका है। हम सब एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। हम यदि एक दूसरे का भोजन हैं तो एक दूसरे के लिए जरूरी भी हैं। अब ये बात तो समझ में आ ही गई है।

शेर ने कहा- "पक्षियों की मदद से सबसे पहले गिद्धों को ससम्मान बुलाओ। हमने बैठक में बिना सोचे-समझे उनका अनादर किया है। मुझे नहीं पता था कि प्रकृति में हर जीव की खास भूमिका है। हम सब एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। हम यदि एक दूसरे का भोजन हैं तो एक दूसरे के लिए जरूरी भी हैं। अब ये बात तो समझ में आ ही गई है।" चींटी रानी ने सूचना दी- "बारिश आने वाली है। आसमान बादलों से भर गया है।" सब खुशी से उछल पड़े। पक्षी गिद्धों को बुलाने के लिए पंख फैला चुके थे।

कीटनाशक दवाएं जीवों और मानवों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं।

संपर्क करें:
मनोहर चमोली 'मनु'
पोस्ट बॉक्स-23, भितांई,
पौड़ी गढ़वाल-246 001
मो.न. 09412158688